19

वस्तुओं को ध्यान में रखना

(4:1-11)

सात कलीसियाओं के नाम पत्रों का अध्ययन करते हुए हमने देखा कि मसीही लोगों को कालांतर में सताया गया (2:13; 3:8), वर्तमान में भी सताया जा रहा है (2:9; 3:9), और भविष्य में इससे भी अधिक सताया जाना था (2:10; 3:10)। मसीही लोगों पर आने वाली कई परीक्षाओं की रूपरेखा अध्याय 6 में और उसके अगले अध्याय में दी गई है। परन्तु आने वाली समस्या के बारे में बताने से पहले यीशु ने अध्याय 4 और 5 की हर बात को ध्यान में रखा।

प्रकाशितवाक्य के इन मुख्य अध्यायों में सताए जा रहे मसीहियों को दिखाया गया था कि जैसा दिखाई दे रहा था, उसके विपरीत परमेश्वर सिंहासन पर अभी भी था और नियन्त्रण रोमी सम्राट के हाथ में नहीं, बल्कि उसी के हाथ में था। इसके अलावा उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि परमेश्वर की अपनी योजनाएं और उद्देश्य हैं और अन्त में उसकी योजनाओं और उद्देश्यों के अनुसार ही होगा।

आज इसी विचार की आवश्यकता है। कुछ लोग आज भी सताए जा रहे हैं, वैसे ही जैसे पहली शताब्दी के मसीही लोग सताए जा रहे थे और लोग दैनिक जीवन की समस्याओं से परेशान हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें ''धन और जीवन के सुख-विलास'' (लूका 8:14) ने अंधा कर दिया है। हम सब को बीच-बीच में यह देखने के लिए कि जीवन वास्तव में क्या है, परमेश्वर के दरबार में वापस आते रहना चाहिए।

अध्याय 4 और 5 हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ले आते हैं, जिस कारण हमें यह देखने के लिए कि अपने जीवनों में वस्तुओं को कैसे ध्यान में रखना है, इन वचनों को भक्ति और भय के साथ देखते हैं।

इधर-उधर देखने के बजाय ऊपर की ओर देखें (4:1, 2क)

पृथ्वी पर शैतान प्रबल था और लग रहा था जैसे वह सर्वशक्तिमान है। भलाई को हतोत्साहित कर दिया गया था और ऐसा लग रहा था कि वह निर्बल और भेद्य है। इस

दृष्टिकोण को बदलने के लिए यूहन्ना का ऊपर देखना आवश्यक था।

> इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि की,[1] तो क्या देखता हूं कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है; और जिसको मैंने पहिले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है कि यहां ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है। और तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं, कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है (आयतें 1, 2क)।

''इन बातों के बाद'' का स्वाभाविक अर्थ ''सात पत्रों वाले पहले दर्शन के पूरा होने के बाद है।''[2] NCV में '' *दर्शन* की इन बातों के बाद ... है।'' यूहन्ना को वे चीज़ें जैसी थीं, वैसे ही दिखाकर यीशु उसे यह बताना चाहता था कि आगे क्या होने वाला है। इस प्रकार दूसरे दर्शन का परिचय दिया गया।

ऊपर दृष्टि करने पर, यूहन्ना ने देखा कि ''स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है।'' द्वार खुला होने के बावजूद यूहन्ना ने उसमें प्रवेश करने का साहस नहीं किया, बल्कि बुलाए जाने की प्रतीक्षा करने लगा। तुरही जैसी एक आवाज़[3] आई, वही आवाज़ जिसने उससे पहले बात की थी (CEV), जब उसने ''मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरुष को देखा'' था (1:13)। उस आवाज़ ने कहा, ''यहां ऊपर आ जा; और मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना आवश्यक है।''

''जिनका इन बातों के बाद पूरा होना आवश्यक है'' में वह भी था जो कलीसिया के लिए रखा गया था अर्थात जो रोम ने अपने पापों की कटनी काटनी थी, कैसे इस संसार ने समाप्त होना था और आने वाला संसार कैसा होना था। ''आवश्यक है'' शब्दों को रेखांकित कर लें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ''जो बातें होनी *चाहिए*'' या ''जो बातें हो *सकती* हैं'' की नहीं बल्कि ''जो बातें होनी *आवश्यक*'' हैं, की पुस्तक है। वे होनी ही *थीं,* और वे *होंगी* ही, क्योंकि वे ''ईश्वरीय इच्छा का परिणाम'' थीं।[4]

उसकी दिलचस्पी बढ़ने लगी, यूहन्ना ने अपने आप को ''आत्मा में''[5] उत्तर देने के लिए तैयार पाया, तुरन्त उसे खुले द्वार में से स्वर्ग के दरबार में उठा लिया गया![6]

यह ध्यान देने से पहले कि यूहन्ना ने क्या देखा, हम इस बात पर बल देने के लिए रुकते हैं कि यूहन्ना मसीही लोगों की परीक्षाओं और परेशानियों को सही परिप्रेक्ष्य में इसलिए रख पाया क्योंकि उसने ऊपर देखा था। जब तक उसकी आंखें मसीही लोगों की निर्बलता और रोम की शक्ति पर थीं, तब तक सब कुछ आशाहीन लग रहा था। अपनी आंखें स्वर्ग की ओर लगाकर परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने पर ही उसका नज़रिया बदल पाया।

हमारी आंखें जब इस संसार पर लगी होती हैं तो दबे हुए महसूस करना आसान होता है। संसार में इतना क्रोध, घृणा और विशुद्ध नीचता है कि मुझे समाचार सुनते और समाचार पत्र पढ़ते हुए भी डर लगता है। समाज की कुरूपता के अलावा आमतौर पर धन की समस्याएं, पारिवारिक कठिनाइयां, तनावपूर्ण सम्बन्ध, नौकरी का दबाव, बीमारी और मृत्यु

जैसी व्यक्तिगत समस्याएं भी हमें डराती हैं। जब समस्याएं हमें परेशान करती हैं तो हमें क्या करना चाहिए? यूहन्ना की तरह हम ऊपर को देख सकते हैं। प्रभु ने परमेश्वर के दरबार का द्वार खुला रखा ताकि आज भी हम वैसे ही देख सकें, जैसे यूहन्ना ने देखा था और शांति पाएं!

संसार की कुरुपता के बजाय परमेश्वर की असाधारणता को देखें (4:2-8)

स्वर्ग में उठाए जाने पर यूहन्ना ने क्या देखा? इस दर्शन को अपने मन में उतारें:

> तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं कि एक सिंहासन[7] स्वर्ग में रखा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है। जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष[8] दिखाई देता है और उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन[9] श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के मुकुट हैं।[10] और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जना[11] निकलते हैं और सिंहासन के सामने आग के सात दीवट[12] जल रहे हैं, ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं। और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है, और सिंहासन के बीच में[13] और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिन के आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहिला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। और चारों प्राणियों के छह-छह पंख हैं, और चारों ओर और भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात-दिन बिना विश्राम किए यह कहते रहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है (आयतें 2-8)। (सिंहासन के आस-पास का दृश्य का चित्र देख।)

इस विवरण से परेशान न हों। टीकाकार चौबीस प्राचीनों की पहचान, कांच के से समुद्र के महत्व, और चार प्राणियों के अर्थ और उद्देश्य को समझ नहीं पाते हैं; परन्तु उन विवरणों पर बल देने का अर्थ मुख्य बात से चूकना है। यह दृश्य आंखों को चुंधियाने और कल्पना को लड़खड़ाने के लिए तैयार किया गया है। इसे परमेश्वर की भव्यता पर हमारे चकित होने के लिए रखा गया है।

तृप्त होने से पहले हमें भी इसके संकेतों के सम्भावित महत्व को समझने का प्रयास करना पड़ेगा। परन्तु सबसे पहले हम दृश्य को पूर्ण रूप से देखें और यह कि यूहन्ना पर इसका क्या प्रभाव पड़ा। अपने आप को यूहन्ना की जगह रखकर उसकी कल्पना करने का प्रयास करें, कि यूहन्ना ने क्या देखा और उसे क्या लगा होगा। मैं भी इसे अपने मन में ऐसे देखता हूं।

यूहन्ना को मालूम नहीं था कि उसने क्या उम्मीद की थी, परन्तु उस महिमा और तेज़ की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। उस दृश्य की चमक से उसकी आंखें बंद सी हो

गईं और वह डर गया, उसने अपने सामने के दृश्य की महत्वपूर्ण बातें समझने का प्रयास किया।

बीच के मंच पर एक बड़ा सा सिंहासन अर्थात सर्वशक्तिमान का ऊंचा आसन था! सिंहासन से मेघधनुष के चमचमाते रंग पड़ रहे थे। सिंहासन के इर्द-गिर्द छोटे-छोटे सिंहासनों का एक चक्र था।[14] उन सिंहासनों पर प्राचीन, श्वेत वस्त्र पहने सोने के मुकुटों वाले तेज़ चमक में नहाए पथरीले चेहरे थे।

अचानक सिंहासन से भयभीत करने वाली गर्जन की गड़गड़ाहट और चमक का प्रकाश पड़ने लगा। फिर सिंहासन के कदमों में सात दीवट दमक उठे, जिससे यूहन्ना चौंक गया। उसके और उस खालिस शक्ति के बीच में एक विशाल चमचमाता विस्तार था और यूहन्ना इस दूरी से प्रसन्न था। उसका दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था, मानो यह उसके सीने से बाहर आने वाला हो।[15]

नज़र टिकने के बाद यूहन्ना ने सिंहासन के आस-पास की चमक में झांक कर विलक्षण प्राणियों को देखा। उनका रूप सुन्दर और अद्‌भुत था। सब के पंख लगे थे जिन पर न झपकने वाली, सब कुछ देखने वाली आंखें ही आंखें थीं। आत्मा के द्वारा यूहन्ना को पता था कि वे संसार के सबसे बहादुर, सबसे शक्तिशाली, सबसे बुद्धिमान और सबसे फुर्तीले जीव हैं। फिर इस प्रेरित को उनके गीत का पता चला। उन्हें सिंहासन पर विराजमान की स्तुति सुनकर यूहन्ना उस गीत में खो गया: ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था जो है और जो आने वाला है।'' यूहन्ना भयभीत हो गया था। ...

2 से 8 आयतों को फिर से पढ़ने और दृश्य को फिर से दोहराने के मेरे प्रयासों के लिए एक पल के लिए रुकें। फिर इन प्रश्नों पर विचार करें: आपको क्या लगता है कि इस दृश्य से यूहन्ना पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? इससे *आप* पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस दृश्य पर मनन करते हुए आपके मन में क्या बातें आती हैं: ''महिमा,'' ''भव्यता'' ''चमक,'' ''शक्ति,'' ''सामर्थ''? इस दृश्य का *मुख्य* उद्देश्य आपके दिलो-दिमाग़ पर परमेश्वर की महानता का प्रभाव डालना है! इसमें दी गई बातों का उद्देश्य उन पर ध्यान दिलाना नहीं बल्कि उस अवधारणा को समझना है।

विचार के लिए एक और प्रश्न यह है: इस दृश्य का यूहन्ना पर *व्यावहारिक* असर क्या हुआ? परमेश्वर की महिमा और शक्ति देखने के बाद, यूहन्ना फिर रोम की शक्ति को वैसे कभी नहीं मान सकता था। परमेश्वर के सिंहासन की तुलना में, डोमिशियन का सिंहासन सूखा मल ही था, जो कूड़े के ढेर पर फैंके जाने के योग्य था। परमेश्वर की महिमा के आगे रोम की शान पन्नी चढ़ा कपड़ा ही था। परमेश्वर की शक्ति के विरुद्ध रोमी सेना नव जन्मे बालक की तरह असहाय थी।

आप में से कई लोगों को अपने विरुद्ध तैनात द्वेषपूर्ण बलों के साथ मसीही जीवन में लगे होने की कठिनाई का पता है। कइयों के लिए वह बल विरोधी सरकार हो सकता है। कइयों के लिए यह कठोर नियोक्ता, अविश्वासी परिवार, सहयोग न करने वाला जीवन साथी, लड़ाकू पड़ोसी या मदद न करने वाले मित्र हो सकते हैं। जब हमारे शस्त्र पुराने पड़ने

लगें और हमारे कदम डगमगा जाएं (गलातियों 6:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:13) तो हमें अपने सिर ऊपर उठाकर एक बार फिर से परमेश्वर की महिमा अर्थात सर्वशक्तिमान और प्रेमी परमेश्वर को देखना चाहिए, जो हम से प्रेम करता और हमारी सम्भाल करता है (रोमियों 8:35-39)। हमारे परमेश्वर के अलावा संसार की हर चीज़, चाहे वह कोई भी क्यों न हो पुरानी पड़ जाती है। हमें इस सच्चाई से शांति और सामर्थ मिलनी चाहिए।

इस बात को पहचानें कि संसार पर मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर शासन करता है (4:2-8क)

उस दर्शन को पूरा देख लेने के बाद अब समय उसके विवरण को देखने का है। जो सिंहासन पर बैठा था (और है) वह ''प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है'' (आयत 8)। 4:5 में उसे पवित्र आत्मा से और 5:13 में यीशु (मेमना) से मिलाया गया है, इसलिए यह परमेश्वर पिता ही है।

यूहन्ना को पिता का विवरण देने की एक असम्भव चुनौती मिली थी। ''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24क) और ''परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा'' (यूहन्ना 1:18क), तो फिर यूहन्ना उसका विवरण कैसे दे सकता था? यूहन्ना ने पहले लिखा था कि ''परमेश्वर ज्योति है'' (1 यूहन्ना 1:5; देखें 1 तीमुथियुस 6:16)। इसलिए उसने प्रभु को ज्योति और रंग के द्वारा दिखाया[16]: ''और जो उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष दिखाई देता है'' (आयत 3)।

यशब महायाजक के कवच (निर्गमन 28:20; 39:13) और नये यरूशलेम के आधार (प्रकाशितवाक्य 21:18, 19) दोनों में पाया जाने वाला एक प्रसिद्ध रत्न था (यहेजकेल 28:13)। कई बार यशब हरे रंग का भी होता था, परन्तु यूहन्ना के मन में इसकी एक स्पष्ट किस्म थी,[17] क्योंकि बाद में उसने स्वर्गीय यरूशलेम की चमक ''बहुत ही बहुमूल्य पत्थर अर्थात बिल्लौर के समान यशब की तरह'' बताई (21:11)। यदि आप मेघधनुष के सभी रंगों की चमक-दमक वाले भव्य रत्न की कल्पना करें तो आप अधिक गलत नहीं होंगे।[18] खालिस यशब पत्थर परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है (21:11ख) और उसकी पवित्रता को भी दिखाता हो सकता है।

माणिक्य पत्थर भी बाइबल काल में महत्वपूर्ण माना जाता था। यह भी महायाजक के कवच में होता था (निर्गमन 28:17) और स्वर्गीय नगर की नींव में भी था (21:20)। कइयों का मानना है कि यह कोई मोती था, जिसे आज मणि कहा जाता है,[19] जो आम तौर पर रूबी जैसा लगने वाला गहरे लाल रंग का होता है।[20] ''मणि को हाथ में पकड़ने पर ऐसा लगता है जैसे पत्थर के बीच में आग हो।''[21] यह पत्थर परमेश्वर के भयंकर क्रोध का प्रतीक हो सकता है।

मरकत सम्भवतया वही था, जो आज उस पत्थर को कहा जाता है, जो गहरे, चमकीले हरे रंग का होता है और सम्भवतया परमेश्वर के अनुग्रह का सुझाव देता।[22] ऐसी व्याख्या

मेघधनुष के प्रतीक से मेल खाती होगी। 9:8-17 में मेघधनुष के महत्व पर विशेष ध्यान देते हुए, उत्पत्ति 6 से 9 में नूह और जहाज़ की कहानी को फिर से पढ़ें।[23] मेघधनुष हमें परमेश्वर के क्रोध और अनुग्रह दोनों का स्मरण कराता है। विशेषकर मेघधनुष इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर अपना वचन निभाता है: उसने नूह के साथ वाचा बांधी और उस प्रतिज्ञा को पूरा भी किया। इस प्रकार मेघधनुष ने सताए जाने वाले मसीही लोगों को आश्वस्त किया कि उनकी रक्षा और उन्हें सम्भालने के लिए परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा।

आयत 5 सिंहासन पर विराजमान का एक और विचार देती है: ''और उस सिंहासन में से बिजलियां और गर्जन निकलते हैं'' (आयत 5क)। हमारा ध्यान सीनै पहाड़ की ओर पीछे जाता है, जब परमेश्वर की उपस्थिति पहाड़ पर दिखाई दी थी और लोग भय से कांप उठे थे (निर्गमन 19:16)। बिजली और गर्जन का प्रतीक वचन में परमेश्वर की शक्ति, विशेषकर उन्हें दण्ड देने के लिए है, जो उसे प्रभु नहीं मानते दिया गया है (देखें 1 शमूएल 2:10)। अध्याय 4 में गर्जन और चमक पृथ्वी पर पड़ने वाले तूफ़ान के अग्रदूत थे (देखें 8:5; 11:19; 16:18)।

यूहन्ना ने कहा, ''और सिंहासन के सामने आग के सात दीये जल रहे थे। ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं'' (आयत 5ख)। ''सात आत्माएं'' पवित्र आत्मा को ही कहा गया।[24] ''आग के सात दीवट'' पढ़कर आप मन में सात दीयों वाले दीवट की बात सोचेंगे,[25] जिससे पवित्र स्थान में प्रकाश होता था (निर्गमन 25:31-37; 40:24)। पवित्र आत्मा ने हमें आत्मिक प्रकाश (भजन संहिता 119:105) के लिए वचन दिया है (2 पतरस 1:21)।[26] दर्शन में सात लपटें सिंहासन की भव्यता बढ़ाती थीं।

अगले विवरण अर्थात चौबीस प्राचीनों और चार प्राणियों की बात से विद्वान भयभीत हो जाते हैं: सम्भावित अर्थ निकालते हुए कि हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि इन प्रतीकों का उद्देश्य वही था, जो मोतियों, मेघधनुष, तूफ़ान और दीवटों का था अर्थात परमेश्वर की महानता को दिखाकर।

चौबीस बुज़ुर्ग कौन थे? ध्यान दें कि उन्हें ''जय पाने वाले'' मसीही लोगों से की गई यीशु की प्रतिज्ञा की हुई तीन आशिषें मिली थीं: वे राज कर रहे थे (देखें 2:26, 27; 3:21), वे श्वेत वस्त्र पहने हुए थे (देखें 3:5) और उनके पास विजय के मुकुट थे (देखें 2:10)। इससे मैं यह मानता हूं कि वे जय पाने वाले मसीही लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।[27] तो फिर चौबीस अंक का क्या महत्व होगा? यह बारह (सम्पूर्णता का सांकेतिक अंक) का दोगुना है।[28] जो यह सुझाव देता है कि चौबीस ''प्राण देने तक विश्वासी'' (2:10) रहने वाले *सब* लोगों का प्रतिनिधित्व करता था।[29]

परन्तु इस प्रतीक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू 10 और 11 आयतों में मिलता है: ये बुज़ुर्ग पुरखे परमेश्वर के सामने गिर पड़े और सिंहासन के सामने अपने मुकुट डालते हुए,[30] वे गा रहे थे, ''हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, *तू* ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; ...'' (सिंहासन के सामने अपना मुकुट रखता एक प्राचीन का चित्र देख।)जो भी

महिमा उन्हें मिली थी वह महिमा का प्रतिबिम्ब ही था अर्थात वे अपनी महिमामय स्थिति के लिए श्रेय वे नहीं ले सकते थे। महिमा के योग्य केवल परमेश्वर है!

अब हम दर्शन के सबसे अनोखे अर्थात कई पंखों और आंखों वाले चार प्राणियों[31] वाले भाग में आते हैं। (सिंहासन के गिर्द चारों प्राणी का चित्र देख।) यशायाह 6 और यहेजकेल 1; 10 में ''चार प्राणियों'' (4:6) के पूर्ववर्ती मिलते हैं। प्रकाशितवाक्य 4 का विलक्षण चार पहले यशायाह और यहेजकेल द्वारा देखे गए प्राणियों का मेल[32] है। (''भविष्यवाणी के दर्शनों वाले जीवित प्राणी'' वाला चार्ट देखें।)

प्रकाशितवाक्य 4 के विवरण का पहला भाग *यहेजकेल* के दर्शन से जुड़ा है: चार प्राणी थे (यहेजकेल 1:5), उनके ''आंखें ही आंखें भरी हुई'' थीं, जैसे यहेजकेल वाले प्राणियों में ''पहियों'' में ''आंखें ही आंखें भरी हुई'' थीं (यहेजकेल 1:16-18)। यहेजकेल वाले प्राणियों के चार मुख थे (यहेजकेल 1:10), जबकि प्रकाशितवाक्य 4 वाले हर प्राणी का केवल एक ही मुख था; परन्तु उनके मुख[33] यहेजकेल द्वारा वर्णित प्राणियों अर्थात शेर, बछड़ा,[34] मनुष्य और बाज़ जैसे ही थे। प्रकाशितवाक्य का शेष विवरण *यशायाह* के दर्शन से मेल खाता है: प्राणियों के छह पंख थे (यशायाह 6:2)[35] और वे ''पवित्र, पवित्र, पवित्र'' (यशायाह 6:3) पुकार रहे थे।

हर विवरण में इस बात पर बल मिलता है कि वे प्राणी कितने अद्‌भुत थे: वे ''आंखों ही आंखों से भरे हुए'' थे यानी उन्हें सब पता था। वे शेर की तरह बहादुर, बैल की तरह शक्तिशाली, मनुष्य की तरह बुद्धिमान और बाज़ की तरह फुर्तीले थे।[36] उनके कई पंख उन्हें प्रभु की सेवा में कहीं भी ले जा सकते थे।

ये आश्चर्यजनक जीव कौन या क्या थे? यशायाह वाले जीवों को ''साराप'' कहा गया था (यशायाह 6:2, 6)।[37] यहेजकेल वाले जीवों को यहेजकेल 10 में बार-बार ''करूब'' कहा गया था (विशेषकर, आयतें 15 और 20 पढ़ें)।[38] आमतौर पर माना जाता है कि साराप और करूब परमेश्वर की सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ थे, सम्भवतया दो विशेष स्वर्गदूत थे।[39] यूहन्ना वाले चार प्राणी या शायद सारी सृष्टि का संकेत वही थे।[40] वे परमेश्वर के स्वभाव के स्वर्गीय निशानी भी हो सकते हैं।

वे कौन या क्या थे इस बात का इतना महत्व नहीं है, जितना इसका कि उन्होंने *क्या* किया। वे अपने प्रभाव से अपनी महिमा करवा सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि सारी महिमा पिता को दी: ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान''!

एक और टिप्पणी के साथ हम पूरे विवरण को समेट देंगे। (विवरण में उलझ जाना बड़ा आसान है!) मैंने जान-बूझकर अभी तक आयत 6 के पहले भाग ''और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है''[41] । को छोड़ दिया था। प्रकाशितवाक्य में समुद्र का रूपक बार-बार आता है।[42] यहां इसका अर्थ यह हो सकता है कि शरीर में रहते हुए यहां हमारे और परमेश्वर के बीच में वैसी ही रुकावट बनी रहती है जैसे कांच जैसी रुकावट ने यूहन्ना को सिंहासन से अलग रखा था।[43] ''क्या पता'' या ''शायदों'' से अपने आप को न उलझाएं, बल्कि उस दृश्य को देखने की कल्पना करें जो यूहन्ना ने देखा था, जो

''समुद्र'' कहे जाने वाले विशाल चमक में था।

शांत झीलों के पास खड़े होकर मैंने ऊंचे पेड़ों की परछाईं, विशाल पहाड़ों और बादलों से घिरे आसमान को भयभीत होकर देखा है। यूहन्ना चौबीस सिंहासनों वाले, चार विलक्षण जीवों, सात चमकती मशालों, चमचमाती रोशनियों, खतरनाक बादलों और गरज वाले भव्य सिंहासन के दृश्य को देखकर, जो बिल्लौरी समुद्र में दिखाई दे रहा था, भय से कितना भर गया होगा!

इस दृश्य की कल्पना करते हुए ध्यान रखें कि आकर्षण सिंहासन ही है। अध्याय 4 में ''सिंहासन'' (या सिंहासनों) शब्द चौदह बार आया है।[44] शेष हर बात सिंहासन *के सम्बन्ध में* ही देखी जाती है, जैसे चौबीस प्राचीन ''सिंहासन के *चारों ओर* '' (आयत 4) बैठे हैं; ''उस सिंहासन *में से* '' बिजली और गरजन निकले (आयत 5); सात आत्माएं और कांच का समुद्र ''सिंहासन के *सामने*'' (आयतें 5, 6) थे; चार प्राणी ''सिंहासन के *बीच में* और सिंहासन के *चारों ओर*'' थे (आयत 6); सारी आराधना सिंहासन *की ओर* ही थी (आयतें 9,10)।

जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा है कि ''[प्रकाशितवाक्य की] पुस्तक की मुख्य शिक्षा, जो सम्पूर्ण मसीह, विश्वास की मुख्य शिक्षा भी है'' यह कि ''अनादि परमेश्वर अर्थात स्वर्ग में विराजमान, संसार की मुख्य शक्ति है।''[45] डोमिशियन को परमेश्वर के संरक्षण वाले लोगों ने अस्थायी तौर पर अपने सिंहासन पर बैठने की अनुमति दी, परन्तु उसे किसी भी क्षण उतारा जा सकता था। परमेश्वर का सिंहासन दूसरे किसी भी सिंहासन से ऊपर है!

आज हमें यही समझने की आवश्यकता है। कई लोगों के मन में मुख्य आकर्षण रोम ही है, परन्तु कइयों ने अपना ध्यान समृद्धि, प्रतिष्ठा, सत्ता और प्रसिद्धि जैसी उन इच्छाओं पर लगा लिया है, जो उतनी ही बेकार हैं, औरों ने अपना ध्यान इस जीवन के अन्यायों तथा त्रासदियों पर लगाया है, जिससे उन्हें केवल वही दिखाई देती हैं। आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग जीवन को ''किसी मूर्ख द्वारा बताई कहानी'' के रूप में देखते हैं, ''जिसमें शोर-शराबा और उत्तेजना है परन्तु इसका कोई अर्थ नहीं।''[46] बीच में परमेश्वर का सिंहासन न होने पर जीवन का कोई अर्थ नहीं रहता।

भजन लिखने वाले ने कहा है, ''यहोवा राजा है; उस ने महात्म्य का पहिरावा पहिना है; यहोवा पहिरावा पहिने हुए, और सामर्थ्य का फेटा बान्धे है''(भजन संहिता 93:1क, ख)। ओ.डब्ल्यू. होम्स ने लिखा है:

> सब जीवों के प्रभु, दूर सिंहासन पर विराजमान तेरी महिमा सूर्य और तारे की चमक में है; हर दायरे का केंद्र और प्राण फिर भी हर प्रिय मन के कितना निकट है![47]

इस पाठ की एक चुनौती, *संसार* के केंद्र में परमेश्वर के सिंहासन को देखना और फिर *अपने जीवन* के बीच में उसका सिंहासन बनाना है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपकी सोच बदले बिना नहीं रह सकती।

मानें कि परमेश्वर, और केवल परमेश्वर ही महिमा के योग्य है (4:8ख-11क)

दृश्य को देखने के बाद हम ज़बर्दस्त आराधना सेवा वाले कार्य पर आते हैं। चार जीवित प्राणियों का वर्णन करने के बाद यूहन्ना ने कहा, ''वे रात-दिन बिना विश्राम किए यह कहते रहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है'' (4:8)।

ये प्राणी पहले तो परमेश्वर की उसकी *पवित्रता* के लिए महिमा कर रहे थे। ''पवित्र'' शब्द को तीन बार दोहराना उत्तम अवस्था को व्यक्त करने का यहूदी ढंग था कि परेमश्वर *सबसे* पवित्र है अर्थात वह *पवित्रत्तम* है! फिर उन्होंने उसकी *सामर्थ* को माना कि वह ''प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान है।'' डोमिशियन ने यह शीर्षक स्वयं को दिया था, परन्तु यह तो केवल परमेश्वर के लिए था। अंत में इन चारों ने परमेश्वर के स्थायित्व का गीत गाया[48]: ''जो था और जो है और जो आने वाला है।''[49] संसार बदलता रहता है, परन्तु परमेश्वर वही रहता है।

जब वे चारों ''प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद'' (आयत 9) कर चुके, तो चौबीस प्राचीन ''उसे जो युगानुयुग जीवता है, प्रणाम'' करने के लिए ''सिंहासन पर बैठने वाले के सामने गिर'' गए (आयत 10क)। आराधना से दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं।

यह मानते हुए कि हर अच्छा वरदान उसी की ओर से आता है (याकूब 1:17), प्राचीनों ने ''अपने-अपने मुकुट सिंहासन के सामने डाल'' दिए (आयत 10ख)। (सिंहासन के सामने अपना मुकुट रखता एक प्राचीन का चित्र देखें।) फिर उन्होंने स्थायी गाई : ''हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है'' (आयत 11क)। मूल शास्त्र में ''महिमा,'' ''आदर'' और ''सामर्थ'' से पहले उपपद (''the'') है, जो इस बात का संकेत है कि महिमा की इन अभिव्यक्तियों के योग्य केवल परमेश्वर ही है।

क्या यह अजीब बात नहीं है कि स्वर्ग के ये अद्‌भुत प्राणी परमेश्वर की आराधना करते हैं, परन्तु पृथ्वी पर बहुत से लोग ऐसा करने से इनकार करते हैं? क्या यह अफ़सोस की बात नहीं है कि मनुष्य जाति टेनिस खिलाड़ियों से लेकर दांत के मंजन तक की प्रशंसा करती है, परन्तु परमेश्वर की महिमा करने से बड़े स्तर पर इनकार करती है?

यदि मुझे और आपको ''आत्मा और सच्चाई से आराधना'' करनी है (यूहन्ना 4:24ख) तो हमें परमेश्वर की महिमा करना सीखना होगा, क्योंकि आराधना का सार ही महिमा करना है। ''आराधना'' शब्द का अर्थ ही ''भजन, उपासना, भक्ति, स्तुति, साधना, वंदना, चाकरी, सेवा, अर्चना, अरदास'' करना है। आराधना का सार परमेश्वर की महानता को मानकर उसकी घोषणा करना है। भजन लिखने वाले ने यह सार दिया है:

> हे देश-देश के कुलो, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो! यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है; भेंट लेकर उसके आंगनों में आओ! पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो; हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके साम्हने कांपते रहो (भजन संहिता 96:7-9)!

उसकी महिमा इस तरह करने पर हमें कम से कम चार आशिषें मिलती हैं: परमेश्वर के प्रति हमारी भक्ति नये सिरे से होगी, उसकी उपस्थिति की गहरी समझ होगी उसके लिए अपनी आवश्यकता के प्रति हम सजग होंगे और अपने साथी आराधकों के साथ हमारा निकट सम्बन्ध होगा।

इस बात को समझें कि पृथ्वी पर हमारा उद्देश्य परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है न कि अपनी इच्छा को (4:11)

चार प्राणियों ने परमेश्वर की महिमा पवित्र, सामर्थी और अनादि के रूप में की थी। फिर चौबीस प्राचीनों ने उसकी महिमा सृजनहार के रूप में की: ''हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं'' (आयत 11)।

बाइबल के *आरम्भ* में, हमें ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1) शब्द मिलते हैं। बाइबल के *मध्य* में हम पढ़ते हैं कि ''उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गए'' (भजन संहिता 148:5ख)। बाइबल के *अंतिम भाग* में फिर से दोहराया गया है कि ''उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई ... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं'' (कुलुस्सियों 1:16; देखें प्रेरितों 17:24; इब्रानियों 11:3)। ''मनुष्य ने कई शक्तियां पा ली हैं परन्तु उसके पास सृजन की शक्ति नहीं है। वह किसी चीज़ को बदल सकता है और तोड़कर बना सकता है; परन्तु ऐसा वह केवल पहले से मौजूद वस्तुओं से ही कर सकता है; लेकिन केवल परमेश्वर ही शून्य से कुछ भी बना सकता है।''[50]

आयत 11 को पढ़ते हुए मुझे तीन सबसे बड़े प्रश्नों का ध्यान आता है: ''मैं कहां से आया हूं?''; ''मैं यहां क्यों हूं?''; ''मैं कहां जा रहा हूं?'' वचन के इस भाग में दो प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से मिल जाते हैं और तीसरे का संकेत मिलता है।

''*मैं कहां से आया हूं?*'' मैं परमेश्वर की ओर से आया हूं: ''तू ने सब वस्तुओं की सृष्टि की है।'' मैं संयोग या किसी काल्पनिक विकासवाद की प्रक्रिया से नहीं बना हूं, बल्कि मैं तो परमेश्वर की विशेष सृष्टि हूं। मुझे उसके स्वरूप पर बनाया गया है, और आपको भी। ''वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है'' (प्रेरितों 17:25ग)।

''*मैं यहां क्यों हूं?*'' मैं यहां परमेश्वर की इच्छा के कारण हूं (''तेरी इच्छा से उनका अस्तित्व था''), जिस कारण इस जीवन में मेरा उद्देश्य उसकी इच्छा को पूरा करना है। मुझे इस पृथ्वी पर सुख-विलास का जीवन बिताने, अर्थात अपने दिनों को आमोद-प्रमोद से भरने या वैसे सफल होने के लिए नहीं रखा गया, जैसे संसार सफलता का अर्थ बताता है। KJV बाइबल के शब्दों का इस्तेमाल करें तो आप और मैं यहां *उसके* ''आनंद'' के लिए हैं (आयत 11)।

''*मैं कहां जा रहा हूं?*'' एक दिन मुझे परमेश्वर के सामने जाना है, जिसने मुझे बनाया और मुझे उस सब का जो पृथ्वी पर मैंने किया है, हिसाब देना होगा (देखें 20:11-15)। ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'' (रोमियों 14:12);

''फिर यहां ... यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य है'' (1 कुरिन्थियों 4:2)। आपको और मुझे इससे भयानक सच्चाई नहीं मिल सकती।

सारांश

बर्टन कॉफमैन ने कहा है, ''संसार के बारे में जो सबसे महत्वपूर्ण बात पता चल सकती है, वह यह है कि इसका नियन्त्रण कक्ष है।''[51] पृथ्वी पर चाहे कितनी भी गड़बड़ क्यों न हो परन्तु स्वर्ग में सब-कुछ ठीक-ठाक है। हमारे आस-पास चाहे कितने भी परिवर्तन क्यों न होते हों, परमेश्वर वही है। हमें अपने आप में चाहे कितना भी अकेलापन लगे, परन्तु परमेश्वर ने हमें छोड़ा नहीं है। प्रकाशितवाक्य 4 का संदेश यह है कि परमेश्वर ने अपना सिंहासन नहीं त्यागा है।

परमेश्वर के दरबार में देखते हुए क्या हमें जीवन की जटिल समस्याओं के सभी उत्तर मिल जाते हैं? नहीं, परन्तु हमें सबसे महत्वपूर्ण उत्तर दिया जाता है कि हमें चाहे इसकी समझ आए या न कि जो हो रहा है वह क्यों हो रहा है, तौ भी हम आश्वस्त हो सकते हैं कि नियन्त्रण अभी भी परमेश्वर के हाथ में है और अन्त में सब-कुछ ठीक ही होगा! हमें उसका यही आश्वासन है।

मेमने और परमेश्वर के महान उद्देश्य का परिचय कराते हुए अध्याय 5 जीवन के लिए हमारी समझ को बढ़ा देगा। अध्ययन जारी रखते हुए हमें इस बात की और समझ मिलेगी कि परमेश्वर ने सताए जाने वाले मसीही लोगों के जीवनों में कैसे कार्य किया।

परन्तु अभी के लिए हम उससे जो हमने इस पाठ में सीखा है, सामर्थ पाएं। रेगिनल्ड हेबर ने ''पवित्र, पवित्र, पवित्र'' गीत में दर्शन के सार को पाया है:

अक़दस, अक़दस, अक़दस, रब ख़ुदा-ए-क़ादिर,
सुबह के वक्त हम गाते, हम्द तेरी ऐ ख़ुदा;
अक़दस, अक़दस, अक़दस, ऐ रहीम-ओ-क़ादिर,
फ़ज़ल में कामिल, वाहिद ख़ुदा।

अक़दस, अक़दस, अक़दस, तेरे तख़्त के सामने
कुल मुक़द्दस हरदम गाते हैं सना;
करोबीम और सराफ़ीम सर को हैं झुकाते;
तू था, और है, और रहेगा सदा।[52]

परमेश्वर की महिमा को देखने के मनुष्य के ढंग को कोई बदल नहीं सकता। स्तिफनुस पर पथराव हो रहा था जब ''उसने ... स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को देखा'' (प्रेरितों 7:55ख) था। उस दर्शन से उसे होंठों पर प्रार्थना के लिए मरने की सामर्थ मिली (प्रेरितों 7:60) थी। जब मैं और आप निराश हो जाएं और हमारी सामर्थ जवाब देने लगे तो झरोखे में से झांक कर देखें, ''प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान'' पाएंगे (यशायाह 6:1ख)। इससे हमारा देखने का नज़रिया बदल जाएगा![53]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का वैकल्पिक शीर्षक ''अपने जीवनों पर ध्यान रखना'' हो सकता है।

इस पाठ में ब्रायन वाट्स द्वारा दिया गया चित्र शामिल किया गया है। सिखाते या प्रचार करते समय यदि आप दर्शन का रेखाचित्र बनाना चाहें तो उसके लिए ब्रायन की तस्वीर आपको बहुत बड़ी लग सकती है। आप इस आसान ढंग को चुन सकते हैं, जिसमें मूल विवरण मिलते हैं:

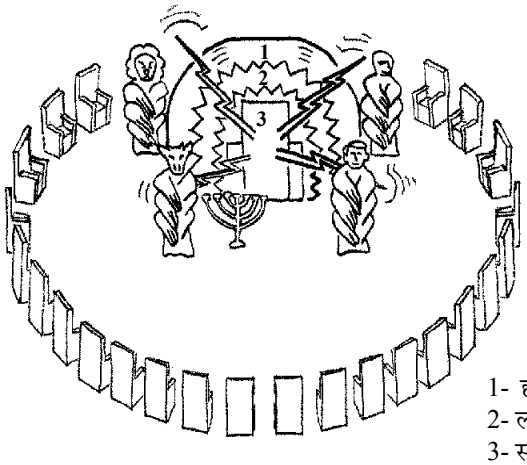

1- हरा
2- लाल
3- साफ़

यूहन्ना द्वारा अपनी आंखें इस संसार से हटाकर स्वर्ग की ओर लगाने पर विचार करते हुए एक उदाहरण मेरे ध्यान में आया: कल्पना करें कि डाक में एक टूटा हुआ डिब्बा आ जाता है। उसका गत्ता फटा हुआ और गंदा है। पैकिंग से लगता है जैसे उसमें कोई कीमती चीज़ नहीं होगी इसलिए उसे फैंक दिया जाना चाहिए, परन्तु खोलने पर उसमें खजाना मिलता है! वैसे ही जब हमारी आंखें इस संसार पर लगी होती हैं तो हमें केवल जीवन की खराब पैकिंग ही दिखाई देती है। जब हमारी आंखें स्वर्ग पर लग जाती हैं तो हम देख सकते हैं कि जीवन क्या है और यह कि हम स्वर्गीय धन पा सकते हैं। समझाने के लिए आप एक पैकिंग वाला डिब्बा लेकर इस उदाहरण का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अध्याय 4 को समझने का एक और ढंग सिंहासन पर ध्यान लगाना है। इस पाठ का नाम ''परमेश्वर का दरबार'' हो सकता है, जिसमें ''सिंहासन'' शब्द को मुख्य रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है: (1) सिंहासन पर: महिमा (आयतें 1-3); (2) सिंहासन के चारों ओर: अनुग्रह[54] (आयतें 4, 10); (3) सिंहासन से: प्रबन्ध (आयत 5क); (4) सिंहासन के सामने: अगुआई[55] (आयतें 5ख, 6क); (5) सिंहासन के बीच में: महानता (आयतें 6ख-8क); (6) सिंहासन की ओर: धन्यवाद (आयतें 8ख-11)। मैरिल सी.टैनी ने (1) सिंहासन पर बैठे लोग, (2) सिंहासन का स्थान, (3) सिंहासन पर होने वाली आराधना की तीन मुख्य बातें बताकर इस अध्याय को ''कभी न मिटने वाला सिंहासन'' कहा है।[56]

इस अध्याय के लिए आप जो भी ढंग इस्तेमाल करें, आपको चाहिए कि इस और इससे मिलते-जुलते पाठों का इस्तेमाल, जहां भी अवसर मिले प्रभु की महिमा के लिए करें। प्रकाशितवाक्य में कई अच्छे-अच्छे गीत हैं, जिनमें से अधिकतर भजनों की हमारी पुस्तकों में भी हैं। समय-समय पर इस पाठ से गीत गाना गलत नहीं होगा।

4 और 5 अध्यायों का अध्ययन दो मुख्य बातों के साथ अलग-अलग किया जा सकता है। अध्याय 4 परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में और अध्याय 5 छुटकारा देने वाले के रूप में दिखाता है। अध्याय 4 प्रभु द्वारा बनाए भौतिक जीवन का जश्न मनाता है, परन्तु अध्याय 5 आत्मिक जीवन का। दोनों अध्यायों को इस प्रकार नाम दिए जा सकते हैं: (1) परमेश्वर की शान और (2) छुटकारे का भेद; (1) राज करता प्रभु और (2) छुड़ाने वाला मेमना। जिम मैक्गुइगन ने सुझाव दिया है कि यूहन्ना 14:1 में यीशु के शब्द इन दो अध्यायों की रूपरेखा जैसे हैं: ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो [दोनों अध्यायों का विषय-वस्तु]; परमेश्वर पर विश्वास रखो [अध्याय 4] और मुझ पर भी विश्वास रखो [अध्याय 5]।''[57] जिम बिल मैक्विंटयर ने अध्याय 4 और 5 का इस्तेमाल महिमा पाए हुए यीशु पर एक पाठ के आधार के रूप में किया।[58]

टिप्पणियां

[1]पुस्तक में नये दर्शनों के परिचय के लिए यही ढंग बार-बार अपनाया गया है (देखें 7:1, 9; 15:5; 18:1; 19:1)। [2]कई प्री-मिलेनियलिस्टों (अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों) का मत है कि 4 और 5 अध्याय पृथ्वी पर सात वर्ष का सताव होने के समय हवा में सात वर्ष के रैप्चर का बताते हैं। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम पूरा हो गया है'' पाठ देखें।) इसके सम्बन्ध में कुछ प्री-मिलेनियलिस्ट लोग सिखाते हैं कि सात कलीसियाएं कलीसिया के सात कालों को, जिसमें लौदीकिया की कलीसिया, कलीसिया के अन्तिम युग को दर्शाती है। वे सिखाते हैं कि ''इन बातों के बाद'' का अर्थ ''कलीसिया के सभी सातों युग समाप्त होने के बाद'' है। पहले हमने देखा था कि सात कलीसियाएं कलीसिया के सात युगों को *नहीं* दर्शातीं। अब मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि ''इन बातों के बाद'' का अर्थ काल्पनिक ''सातवां युग'' के बाद *नहीं* है। [3]यह सम्भवतया यीशु की आवाज़ थी। ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई'' पाठ में इस आवाज़ पर नोट्स देखें। [4]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो.संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1987), 85. [5]1:10 पर टिप्पणियों के सम्बन्ध में ''आत्मा में'' के सम्भावित अर्थों पर चर्चा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के ''मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई'' पाठ देखें। हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य लिखते समय यूहन्ना आत्मा ''में या से बाहर'' था, बल्कि यह इस बात पर ज़ोर देने के लिए समय-समय पर इस्तेमाल किया जाने वाला नाटकीय ढंग (देखें 17:3; 21:10) था। पूरे प्रकाशिवाक्य के दौरान यूहन्ना आत्मा की अगुवाई में था (या उसकी आत्मा परमेश्वर के नियन्त्रण में थी) [6]वह देह में उठाया गया या केवल ''आत्मा में''? सम्भवतया उसकी आत्मा ही उठाई गई, परन्तु हम पक्का नहीं बता सकते। [7]''सिंहासन'' के लिए यूनानी शब्द *thronos* है, जिसका अंग्रेज़ी में लिप्यंतरण (throne) हुआ है। मुख्य सिंहासन केवल एक ही है। कई बार इसे परमेश्वर का सिंहासन (मत्ती 5:34) और कई बार यीशु का सिंहासन (मत्ती 25:31) कहा गया है। प्रकाशितवाक्य 22:1 और 3 में इसे ''परमेश्वर

और मेमने का सिंहासन'' बताया गया है। [8]देखें यहेजकेल 1:28. यूनानी शब्द के अनुवाद ''मेघधनुष'' का अर्थ ''धनुष'' या ''चक्र'' हो सकता है। कई निजी अनुवादों में इस शब्द का अनुवाद ''प्रकाश मण्डल'' भी हुआ है। परन्तु अधिकतर अनुवादों में ''मेघधनुष'' ही है। प्रकाशितवाक्य 10:1 में भी मेघधनुष का प्रतीक इस्तेमाल किया गया है। [9]''प्राचीन'' उस यूनानी शब्द से हुआ है जिसका अर्थ ''बूढ़ा'' है। इस संदर्भ में यह कलीसिया के अधिकारियों के लिए नहीं, बल्कि केवल उनके लिए है, जो बुज़ुर्ग (और, स्पष्टतया अधिक परिपक्व) थे। यह तथ्य कि ये बुज़ुर्ग पुरखे हैं, जिन्होंने अपने आप को परमेश्वर के सामने गिरा दिया, इस दृश्य के महत्व को और बढ़ा देता है। [10]अनुवादित शब्द ''मुकुट'' का यूनानी शब्द 2:10 में इस्तेमाल हुआ शब्द *stephanos* का बहुवचन रूप है। इस शब्द पर ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' पाठ में टिप्पणियां देखें।

[11]''गर्जन,'' ''आवाज़'' के लिए यूनानी शब्द *phone* के बहुवचन रूप का अनुवाद है। इस कारण KJV में "voices" है। परन्तु इस शब्द का सामान्य अर्थ ''आवाज़ें'' या ''शोर'' भी हो सकता है। NIV में ''गड़गड़ाहट'' है। यदि सीनै पर्वत जैसे स्वर का विचार हो तो वह आवाज़ नरसिंगे की आवाज़ जैसी हो सकती है (देखें निर्गमन 19:16)। [12]यूनानी शब्द के अनुवाद ''दीवट'' का अनुवाद यूहन्ना 18:3 में ''मशालों'' हुआ है। प्रकाशितवाक्य 8:10 में इसके एकवचन रूप का अनुवाद ''मशाल'' हुआ है। कई आधुनिक अनुवादों में प्रकाशितवाक्य 4:5 में ''दीवटों'' की जगह ''मशालों'' हुआ है। [13]कहीं और इसी शब्दावली का इस्तेमाल यीशु के लिए किया गया है (5:6; 7:17)। इससे सिंहासन से एक विलक्षण सम्बन्ध का संकेत मिलता है। [14]KJV में "seats" है परन्तु यूनानी में ''सिंहासन''(throne) का बहुवचन रूप *thronous* है। [15]1 और 2 आयतों के बीच में ''और'' शब्द *उत्तेजना* का संकेत देता है। कुछ अनुवादों में इन आयतों के बाद विस्मयबोधक चिह्नों को जोड़कर उत्तेजना का संकेत दिया गया है। [16]अगले अध्याय में, परमेश्वर को ''हाथ'' वाले के रूप में बताया गया है (5:1)। यह ज़ोर देने के लिए कि परमेश्वर के पास वह पुस्तक थी और मेमने ने उससे ली, यह संकेत आवश्यक था। [17]रत्नों के लिए शब्दों का इस्तेमाल करने में प्राचीन लेखकों की बातें एक-दूसरे से मिलती थीं, सो हम इस बात में ज़बर्दस्ती नहीं कर सकते कि उसके लिए आधुनिक शब्द क्या होने चाहिए। [18]मेरे श्रोताओं में से अधिकतर लोगों को यशब पत्थर का पता नहीं है, सो मैं इसकी तुलना हीरे से (देखें LB) करता हूं, क्योंकि अधिकतर हीरे पारदर्शी ही होते हैं। हीरे और यशब की कीमत चाहे एक जैसी न हो परन्तु दिखने में दोनों एक जैसे हो सकते हैं। आप अपने सुनने वालों की समझ में आ सकने वाले पारदर्शी मोतियों का इस्तेमाल कर सकते हैं। [19]RSV, NIV और NCV देखें। मणि एक मूल्यवान पत्थर है, जो यूहन्ना के समय में नक्काशी आदि के लिए प्रमुख सजावटी पत्थर था। (मूल्यवान पत्थर पर प्रकाशितवाक्य 21:19 देखें।) [20]LB देखें। फिर KJV में निर्गमन 28:17 की तुलना NASB में उसी आयत से करें।

[21]ब्रूस मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवेलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस,1993), 48. [22]रंगों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन करने वाले लोग बताते हैं कि हरा रंग शांति का प्रतीक है। अस्पतालों और ऐसे संस्थानों की दीवारों को कई बार हल्का हरा रंग किया जाता है। [23]आप संक्षेप में नूह, जल-प्रलय और मेघधनुष की कहानी दोहरा सकते हैं। यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो किसी छात्र को यह कहानी दोहराने के लिए कह सकते हैं। प्रकाशिवाक्य में इस्तेमाल हुए ''घुमाव'' के संकेत से सावधान रहें, क्योंकि मेघधनुष यहां बहुरंगा होने के बजाय पन्ने के रंग का है। [24]''प्रकाशितवाक्य,1'' के ''कब तक, हे प्रभु?'' पाठ में 1:4 पर नोट्स देखें। ''सिंहासन के सामने'' वाक्यांश ईश्वरीय निर्णयों को लागू करने की उसकी तैयारी का संकेत देता है। [25]इस व्याख्या के मेरे पास तीन कारण हैं: (1) ''सात आत्माएं'' वास्तव में एक ही (पवित्र) आत्मा हैं और वेदी के दीवट में चाहे सात दीये जल रहे थे, परन्तु थे वे एक ही। (2) प्रकाशितवाक्य में स्वर्गीय संकेत का अधिकतर भाग वेदी से लिया गया था और सोने के दीवट की बात उससे मेल खाती है। (3) यह सात दीयों (आत्मा) को अध्याय 1 वाले सात अलग-अलग स्वतन्त्र दीये (सात कलीसियाएं) बना देती है। [26]प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में यह ज़ोर दिया गया है कि प्रकाशितवाक्य आत्मा द्वारा दिया है। (उदाहरण के लिए देखें 1:10; 2:7; 4:2; 14:13.) [27]कई प्राचीन

हस्तलिपियों में 5:10 में प्राचीनों को यह कहते दिखाया गया है कि ''... *हमें* एक राज्य और याजक बनाया है; और *हम* पृथ्वी पर राज करेंगे'' (देखें KJV)। यह इस व्याख्या से मेल खाएगा कि ये प्राचीन मसीही लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस दावे का कि ये प्राचीन मसीही लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, पर मुख्य आपत्ति यह है कि ये 7:13, 14 और 14:3 के उद्धार पर हुए लोगों से अलग थे। इस पुस्तक में ''तूफ़ान से ऊपर उठना'' पाठ में 7:13, 14 पर नोट्स देखें। ''प्रकाशितवाक्य, 4'' में ''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल!'' पाठ में 14:3 पर टिप्पणियां देखें। याद रखें कि यूहन्ना का मुख्य लक्ष्य मेल खाती बातें लिखना नहीं आगामी भाग था। [28]''प्रकाशितवाक्य, 1'' में अंकों के संकेत पर चर्चा देखें। ''बारह'' का इस्तेमाल आमतौर पर *धार्मिक* सम्पूर्णता को दर्शाने के लिए किया जाता था। [29]''चौबीस'' अंक से सम्बन्धित और सुझाव भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए कई लोगों का मत है कि ये प्राचीन हर युग के छुड़ाए हुए लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे ध्यान दिलाते हैं कि प्रकाशितवाक्य में बारह गोत्रों (21:12) और बारह प्रेरितों (21:14) का उल्लेख है। बारह गोत्र (पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधि) के साथ बारह प्रेरित (नये नियम में परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधि) कुल मिलाकर चौबीस हो जाते हैं। वे यह भी ध्यान दिलाते हैं कि छुड़ाए हुए लोग 15:3 में ''... मूसा का गीत, *और* मेमने का गीत'' गाते हैं। अन्य इसे प्रासंगिक पाते हैं कि लेवी का याजकाई गोत्र काम के अनुसार चौबीस भागों में बंटा हुआ था (1 इतिहास 24:18; 28:21; 2 इतिहास 8:14; 31:2, 17; 35:10; लूका 1:5, 8, 9)। प्रकाशितवाक्य 4 में चौबीस प्राचीनों ने परमेश्वर की आराधना की, जिस कारण शायद इस अंक से इस बात पर ज़ोर दिया गया कि वे याजक थे। इस व्याख्या के सम्बन्ध में यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि यदि प्राचीनों की याजकाई का संकेत अंक चौबीस से मिलता है, तो इसका अर्थ यह *नहीं* कि स्वर्ग में सुपर संतों का कोई समूह है, जो हमारे लिए सिफ़ारिश करता हो। नया नियम सिखाता है कि हर मसीही याजक हैं (1 पतरस 2:5) और यह कि हमारा केवल एक ही स्वर्गीय मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5, 6)। [30]सिंहासन के सामने अपने मुकुटों को डालने (या रखने) से यह संकेत नहीं मिलता है कि उन्हें अपने मुकुटों (आत्मिक विजय) की कद्र नहीं थी, बल्कि यह परमेश्वर के प्रति धन्यवाद था कि उसने इस विजय को सम्भव बनाया। उस जमाने में जब किसी राजा को जीत लिया जाता था तो उसे जीतने वाले के सामने अपना मुकुट डालने के लिए विवश किया जाता था। जो बात राजाओं को विवश करके करवाई जाती थी, वही इन विजयी प्राचीनों ने स्वेच्छा से की थी।

[31]अफ़सोस की बात है कि KJV में ''beasts'' है, जो पशु जैसे जीव का सुझाव देता है। यूनानी शास्त्र में ''beast'' के लिए शब्द का इस्तेमाल नहीं है (जिसका इस्तेमाल बाद में 13:1, 11 में यीशु के शत्रुओं के लिए किया गया), परन्तु ''जीवित [वस्तुओं या व्यक्तियों]'' है। [32]यह पुराने नियम के हवालों को घुमाना है। [33]प्रकाशितवाक्य, 4 में केवल एक ही प्राणी के ''मुख'' (मनुष्य का मुख) का उल्लेख है, परन्तु संकेत यह है कि अन्य तीनों का मुख उससे मिलता-जुलता था। उनके मुखों के अलावा हमें चारों प्राणियों के रूपों का पता नहीं है। यहेजकेल वाले प्राणी सभी एक जैसे लगते थे (यहेजकेल 10:10) केवल उनके मुख अलग थे। यूहन्ना द्वारा देखे प्राणियों में यह बात हो सकती है और नहीं भी। [34]RSV और NIV में ''बैल'' है। [35]यशायाह 6:2 छह पंखों का उद्देश्य बताता है। ध्यान दें कि छह पंख दो-दो के *तीन* सैट नहीं हैं। (''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''छह'' अंक पर चर्चा देखें)। [36]''अन्योक्ति मानकर अर्थ निकालना'' की व्याख्या के एक ढंग ने चारों प्राणियों को सुसमाचार के चारों लेखकों के प्रतिनिधि बना दिया। रंगदार शीशे वाली खिड़कियों में मत्ती को आमतौर पर सिंह, मरकुस को बछड़ा या बैल, लूका को मनुष्य और यहून्ना को बाज़ दिखाया गया है। वचन में इस व्याख्या का कोई सुझाव नहीं है। अन्योक्ति (अलंकार) मानना इस बात को दिखाता है कि व्याख्या करने वाले का क्या विचार है न कि बाइबल क्या कहती है। [37]''साराप'' एक इब्रानी शब्द था जिसका अर्थ ''चमकदार'' (या ''जलने वाले'') है। साराप के लिए अंग्रेजी शब्द ''seraphim'' और ''cherubim'' के अन्त में आने वाला ''im'' इब्रानी में बहुवचन शब्द का अन्त है। [38]बाइबल में करूबों का उल्लेख कई बार आया है (उत्पत्ति 3:25; निर्गमन 25:18-20, 22)। [39]''महादूत'' शब्द (मूलत: ''स्वर्गदूत जो ऊपर है''; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16) सुझाव देता है कि कुछ स्वर्गदूत दूसरों के ऊपर हैं। मीकाइल को महादूत कहा गया है (यहूदा 9)। स्वर्गदूतों के क्रम पर हमारे पास कम अतिरिक्त जानकारी है। [40]''चार'' सृष्टि का अंक अर्थात वैश्विक अंक था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे'' पाठ में ''चार'' पर चर्चा देखें।) ''हमें परमेश्वर के हाथ ने बनाया है'' शब्दों वाले भजन

की तरह सारी सृष्टि इसी बात की घोषणा करती है (देखें भजन संहिता 19:1; 150:6)।

[41]उस ज़माने में अधिकतर कांच धुंधला और अपारदर्शी होता था। ''बिल्लौर की तरह'' स्पष्ट या पारदर्शी कांच बहुत कम और अत्यधिक महंगा होता था। अय्यूब 28:17 संकेत देता है कि स्पष्ट या पारदर्शी कांच सोने जैसा कीमती होता था। [42]प्रकाशितवाक्य में अधिकतर समय ''समुद्र'' का संकेत जल से पृथ्वी के ढके होने वाले भाग पर आधारित है (5:13; 7:1)। कभी-कभी इस शब्द का अर्थ मनुष्य जाति का जन सैलाब भी हो सकता है (17:1, 15)। टीकाकारों के लिए एक ही मेल खाती व्याख्या में समुद्र पर मिलने वाले हवालों को मिलाना कठिन होता है, परन्तु ऐसा करना तीन कारणों से अनावश्यक है: (1) अध्याय 4 लिखते समय वास्तव में समुद्र में नहीं बल्कि किसी ऐसी चीज़ को देख रहा था, जिसने उसे समुद्र का ध्यान दिला दिया (''जैसे यह समुद्र हो'')। (2) पुस्तक में समरूपता को हर बार प्राथमिकता नहीं दी गई। (3) यूहन्ना द्वारा वर्णित स्वर्गीय ''समुद्र'' निश्चय ही उस ''पानी'' से अलग है जिस पर वेश्या बैठी है; दोनों प्रकार के पानी को सम्भवतया अन्तर करने की इच्छा से दिया गया (प्रकाशितवाक्य में ऐसी कई भिन्नताएं मिलती हैं)। [43]21:1 में अन्त में छुड़ाए हुए लोग स्वर्ग में परमेश्वर के सामने होने पर ''समुद्र भी न रहा।'' (4:6 वाले समुद्र की और व्याख्याएं सुझाई गई हैं। कुछ लोगों का विचार है कि इस शब्द का संकेत सुलैमान के मन्दिर के सामने वाले उस हौज़ से है, जिसे ''समुद्र'' कहा जाता था [1 राजा 7:23]।) [44]यह शब्द अध्याय 4 के मूल पाठ में चौदह बार आता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यह शब्द चालीस से अधिक बार मिलता है। [45]जे.डब्ल्यू.रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 57. [46]शेक्सपियर *मैक्बेथ* 5.1.17. [47]ओ.डब्ल्यू.होम्स, ''लॉर्ड ऑफ़ बीइंग्स थ्रोन्ड अफ़ार,'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च* सं.आल्टन एच.हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं.,1977)। [48]यदि चारों प्राणी स्वर्गदूतों के क्रम में हो तो कुछ लोग उनके सम्बन्ध में ''गाया'' शब्द के मेरे इस्तेमाल को चुनौती देंगे, परन्तु मेरा मानना है कि चारों प्राणियों ने ऐसा ही किया। अगले पाठ में टिप्पणी 41 देखें, जो स्वर्गदूतों के बारे में हैं। [49]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''कब तक, हे प्रभु?'' पाठ में 1:4 और 1:8 पर नोट्स देखें। [50]विलियम बार्कले, *दे रैवलेशन ऑफ़ जॉन*, अंक 1, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1976), 164.

[51]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 100. [52]रैगिनल्ड हेबर, ''होली, होली, होली'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* सं.ऑल्टन एच.हॉवर्ड (वेस्ट मोनडरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [53]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो गैरमसीही तथा गुमराह मसीही लोगों को अपने आप को सिंहासन के सामने डालने (अर्थात परमेश्वर के आगे झुकने) और उसकी इच्छा मानने को कहें (मरकुस 16:16; याकूब 5:16)। [54]प्राचीनों ने इस बात को महसूस किया कि वे जो कुछ हैं वह परमेश्वर के अनुग्रह के कारण था। [55]यहां पर दिया जाने वाला ज़ोर पवित्र आत्मा पर है, जो मुख्यतया हमें वचन के द्वारा अगुआई देता है। [56]मैरिल सी.टैनी *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 22-24. [57]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* लुकिंग इन-टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सेस, 1976), 78. [58]जिम बिल मैक्विंटयर, ''द विज़न इन-टू हैवन,'' *ग्रेट प्रीचर्स ऑफ टुडे ... सरमन्स ऑफ जिम बिल मैक्विंटयर* सं.जे.डी.थॉमस (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिसर्च प्रेस, 1966),169-74.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या हमारी आंखें आमतौर पर इस संसार से भरी रहती हैं? यूहन्ना की तरह, क्या हमें अपनी सोच को बदलने के लिए ''ऊपर देखना'' आवश्यक होता है?
2. अध्याय 4 वाले दर्शन को पढ़ते हुए आप पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? कौन से शब्द ध्यान में आते हैं?

3. यदि आप ने जास्पर पत्थर, सरदियुस पत्थर और पन्ना के बारे में नहीं सुना, तो किसी प्रसिद्ध रत्न का नाम बताएं, जिससे ऐसा ही प्रभाव पड़ता हो ?
4. मेघधनुष के प्रतीक से आप के विचार से क्या सबक मिलता है ?
5. बिजली और गरज के वर्णन में क्या सबक देने का सोचा गया होगा ?
6. आपको क्या लगता है कि चौबीस प्राचीन किन्हें कहा गया है ?
7. आपके विचार से चार प्राणी किसे या क्या दिखाते हैं ?
8. तीन बार ''पवित्र'' शब्द दोहराने का क्या महत्व था ?
9. ''आराधना'' शब्द का क्या अर्थ है ?
10. क्या यह समझना आवश्यक है कि हमें परमेश्वर द्वारा क्यों सृजा गया है ? क्यों ?
11. इस पाठ के अनुसार तीन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न कौन से हैं, जो पूछे जा सकते हैं। बाइबल इन प्रश्नों का उत्तर कैसे देती है ?
12. अपने जीवन के सबसे परेशान करने वाले या निराशाजनक अनुभवों पर विचार करें। अध्याय 4 वाला दर्शन उस अनुभव से कैसे मेल खाता है ?

भविष्यवाणी के दर्शनों वाले जीवित प्राणी

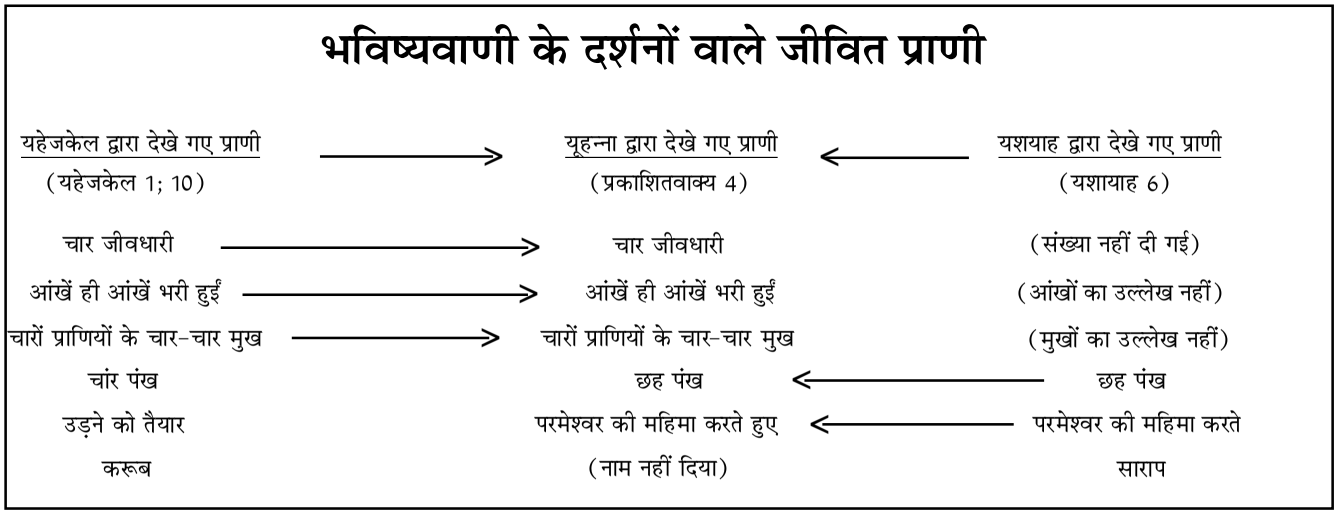

ास का दृश्य (4:2-8)

सिंहासन के गिर्द चारों प्राणी (4:5-8)

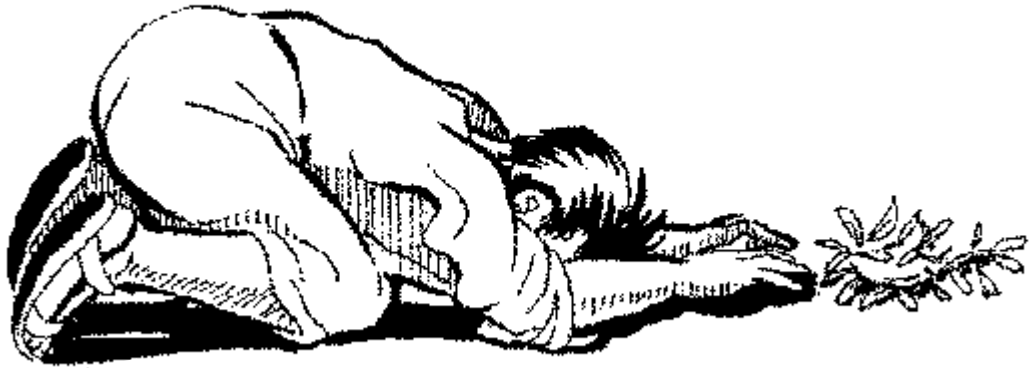

सिंहासन के सामने अपना मुकुट रखते हुए एक प्राचीन (4:10)